

---

# Saparshadashriramakrishnapranamah

सपार्षदश्रीरामकृष्णप्रणामः

## Document Information

---

Text title : Saparshadashriramakrishnapranamah

File name : sapArShadarAmakRRiShNapraNAmaH.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmakRiShNa

Location : doc\_deities\_misc

Author : Swami Balaramananda

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramALA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Saparshadashriramakrishnapranamah

---

### सपार्षदश्रीरामकृष्णप्रणामः

---



नारायणं परं नित्यमजोऽपि याव्ययोऽपि सन् ।  
आविर्भूतं जगत् त्रातुं रामकृष्णं नमाम्यहम् ॥ १ ॥

अजोऽपि या न छिन्नापि भिन्नरूपेण रूपिताम् ।  
जननीं सर्वभूतानां शारदां प्रणामाम्यहम् ॥ २ ॥

लीलासुखरं श्रेष्ठं धर्मयुक्तप्रवर्तकम् ।  
वन्दे तं सङ्घनेतारं विवेकानन्द-स्वामिनम् ॥ ३ ॥

सङ्घस्य प्रथमाध्यक्षं गोपालं ब्रजवासिनम् ।  
रापालं मानसं पुत्रं ब्रह्मानन्दं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

रामकृष्णपदं शान्तं शिवमद्वैतमव्यम् ।  
ददर्श सततं यं तं शिवानन्दं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥

नमामि शारदानन्दं “लीलाप्रसङ्ग” —लेभकम् ।  
तत्पतः वर्णितः यस्मिन् रामकृष्णस्य ज्वनम् ॥ ६ ॥

रामकृष्णगतप्राणं रामकृष्णस्य पूजकम् ।  
लीलाप्रवर्धकं रामकृष्णानन्दं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥

लीलासुखरं शुद्धं शारदापदसेवकम् ।  
नित्यमुक्तं सदाशान्तं योगानन्दं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

मातृवत्सर्वभूतेषु प्रेमवात्सल्यविग्रहम् ।  
अहेतुकं प्रशान्तं य प्रेमानन्दं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

निरञ्जनं सदा मुक्तं पवित्रं मातृसेवकम् ।  
वन्दे निरञ्जानन्दं रामकृष्णपदाश्रितम् ॥ १० ॥

अनाथेषु तथार्थेषु सर्वदा शिवपूजकम् ।  
नमामि निर्मलं सुज्ञामभाण्डानन्द-स्वामिनम् ॥ ११ ॥

उद्धोधनादिउपेक्ष कृत्वा श्रुवप्रबोधनम् ।  
वन्दे तं त्रिगुणातीतं येन प्राणार्पाणं कृतम् ॥ १२ ॥  
वेदान्तशास्त्रमर्मज्ञं योगिनं य मनीषिणाम् ।  
रामकृष्णानतं वन्दे तुरीयानन्द-स्वामिनम् ॥ १३ ॥  
व्याख्यानकुशलं वन्दे सर्ववेदान्तबोधकम् ।  
कालीतपस्विनं पूज्यमभेदानन्दस्वामिनम् ॥ १४ ॥  
भक्तः सुकर्मयोगी य भालभावसमायुतम् ।  
तं भक्तवत्सलं वन्दे सुबोधानन्द-स्वामिनम् ॥ १५ ॥  
अज्ञं निरक्षरं चापि ङ्यक्षरं येन दर्शितम् ।  
वन्दे तमद्भुतानन्दं सरलं शुद्धमानसम् ॥ १६ ॥  
नमामि वृद्धगोपालं शारदाप्रियसेवकम् ।  
अद्वैतानन्दउपेक्ष भक्तवृन्दैः सुपूजितम् ॥ १७ ॥  
निर्मितं सुन्दरं येन रामकृष्णस्य मन्दिरम् ।  
कर्मवीरमलं वन्दे विज्ञानानन्द-स्वामिनम् ॥ १८ ॥  
रामकृष्णं शकान् सर्वान् भिन्नरूपैश्च उपितान् ।  
लीलासुखरान् वन्दे नाना भाव-प्रदर्शकान् ॥ १९ ॥  
लीलासुखरान् सर्वान् युगधर्मस्य स्थापकान् ।  
शारदा-रामकृष्णौ य भूयो भूयो नमाम्युभम् ॥ २० ॥  
एति स्वामिबलरामानन्दविरचितः “सपार्शदश्रीरामकृष्णप्रणामः” समाप्तः ।

Proofread by Aruna Narayanan

---

—  
*Saparshadashriramakrishnapranamah*  
pdf was typeset on June 12, 2023  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

